Utilisation of modern equipment by hospitals

669. SHRI KRISHNA KUMAR BIRLA: Will the Minister of HEALTH AND FAMILY WELFARE be pleased to state:

(a) whether Central Government hospitals in the Capital are not using modern machines or even trying to adopt latest technology for various tests, etc., in comparison to big private hospitals;

(b) whether it is also a fact that the latest machines gifted by WHO to Government hospitals in the Capital are not used and the old manual methods are preferred;

(c) if so, the details of such machines lying idle in Government hospitals in the Capital;

(d) whether any responsibility has been fixed for not using such machines; and

(e) if so, what further steps Government propose to take in this regard?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HEALTH AND FAMILY WELFARE [DR. (SHRIMATI) RITA VERMA]: (a) and (b) The Central Government Hospitals in Delhi, namely, Dr. R.M.L. Hospital, Safdarjung Hospital and LHMC & Associated Hospitals are using modern equipments like Automatic Analyser, CT Scan & Ultra Sound to carry out various investigations. All the equipments supplied by the WHO are being fully utilised and are functional.

(c) No such machine is lying idle in Central Government Hospitals in Delhi.

(d) and (e) Do not arise.

Prevention from Hepatitis-B

†670. PROF. M.M. AGARWAL: Will the Minister of HEALTH AND FAMILY WELFARE be pleased to state:

---

†Original notice of the question was received in Hindi.

मेरा सवाल यह है कि नकदी की मांग में जो कमी है और जो भारी मात्रा में प्रचलित जाली नोट हैं, उनके साथ आप इसको जोड़कर क्यों नहीं देखते हैं? आपके आंकड़े यह बताते हैं कि एक साल में जो पकड़े गए जाली नोट हैं, उनकी संख्या दुगुनी-तिगुनी बढ़ती जा रही है और आपने वर्ष 2002 का जो आंकड़ा दिया है, उसके पहले छह महीनों का जो आंकड़ा दिया है, उसको देखने से लगता है कि अभी यह संख्या और बढ़ेगी। इसलिए मेरा सवाल यह है कि 2000-2001 में नकदी की मांग में जो कमी देखी गई, क्या उससे प्रचलन में आए जाली नोटों का कुछ अनुमान लगाया जा सकता है? क्या सरकार ने इस लिहाज़ से इसका कभी अध्ययन किया है? एक साल में अचानक नकदी की मांग में जो 6.8 प्रतिशत की कमी आई, उसका एक बड़ा हिस्सा जाली नोटों का हो सकता है। क्या इस बात को ध्यान में रखकर आपने कोई अध्ययन किया है?

सभापति महोदय, हिंदुस्तान टाईम्स में एक रिपोर्ट छपी है जिसके अध्ययन से यह पता चलता है कि हमारे यहां बाज़ार में जितनी मुद्रा प्रचलन में है, उसका 15 फीसदी हिस्सा जाली नोटों का है। इसलिए मैं आपसे पूछना चाहूंगी कि क्या आप इस संबंध को स्वीकारते हुए इसका अध्ययन करेंगे?

श्री यशवंत सिन्हा: सभापति महोदय, इस प्रश्न में ही यह सन्निहित था कि RBI के मुद्रा विस्तार या मुद्रा प्रबंधन की जो नीति है, क्या उससे जाली नोटों को प्रोत्साहन मिल रहा है। इसके उत्तर में हम लोगों ने कहा है कि दोनों के बीच में कोई सीधा संबंध स्थापित करना मुश्किल है। मुद्रा की जो मात्रा है, वह बाज़ार में क्यों बढ़ती है, क्यों घटती है, इसके कई कारण हैं और एक महत्वपूर्ण कारण यह है कि यदि हमारे यहां विदेशी मुद्रा का भंडार बढ़ता है तो उसके चलते देश के भीतर जो मुद्रा का विस्तार है; वह भी बढ़ता है। इसी तरह जब आर्थिक गतिविधियां बढ़ती हैं, तब भी मुद्रा का विस्तार बढ़ता है। तो इसके कई कारण हैं और जाली नोटों का प्रचलन ही इसका मुख्य कारण है, यह शायद स्वीकार करना मेरे लिए मुश्किल होगा, क्योंकि इसका हमारे पास कोई प्रमाण नहीं है।

सभापति महोदय, में एक आंकड़ा सदन के सामने रखना चाहता हूं कि हम दो प्रकार से जाली नोटों को डिटेक्ट करते हैं। एक तो जो नोट बैंक में पहुंचा, वहां पर डिटेक्ट हुआ और रख लिया गया और दूसरा जो कि पुलिस के माध्यम से सीज होता है, जो स्मगलर्स फेक करेंसी नोट लाते हैं अगर उनको पुलिस ने या दूसरी एजेंसीज ने पकड़ा, कस्टम ने पकड़ा तो वह सीज होते हैं। जब इन दोनों आंकड़ों को पिछले वर्षों की तुलना में हमने देखा तो हमने पाया है 31 दिसम्बर, 2000 तक जो आंकड़े उपलब्ध हैं, उनके अनुसार अगर पूरे देश में एक लाख 96 हजार 110 करोड़ की मुद्रा का प्रचलन था तो इसकी तुलना में जो पकड़ा गया या फेक इंडियन